लक्ष्य निर्धारित करना

किसी ने कहा है, ''बोलना सीखना कठिन नहीं है। यह तैरना सीखने की तरह ही है। आपको केवल पानी में कूदने की ही आवश्यकता है, हाथ पैर अपने आप चलने लग पड़ते हैं।'' कई बार अगुवे अपने काम को कुछ इसी तरह देखते हैं: वे सोचते हैं कि यदि वे केवल ''कूद पड़ें और हाथ पांव मारने लगें'' तो काम हो जाएगा। वे हॉलीवुड के गवाले जैसे हो सकते हैं। जिसके बारे में कहा गया था कि उसने ''अपने घोड़े पर कूदकर सब दिशाओं में सवारी की।'' हो सकता है कि अगुवे ''सब दिशाओं में सवारी करें'' और, व्यस्त होने के कारण, उन्हें लगे कि वे अपनी सेवकाई को पूरा कर रहे हैं। हो सकता है कि वे ऐसा न करते हों। हो सकता है कि कोई कार्य अपने लिए किसी काम का न हो। ''दिशाहीन'' लहर से कुछ लाभ नहीं होगा।

कलीसिया के अगुओं के लिए आवश्यक प्रबन्धकीय कलाओं में, लक्ष्य निर्धारित करने की योग्यता को सबसे पहला स्थान मिलता है। *अगुओं के लिए लक्ष्य निर्धारित करना आवश्यक है।*[1] यदि अगुआई करने वाले दूसरों की अगुआई पहले से ठहराए हुए उद्देश्यों या लक्ष्यों को पूरा करने के लिए कर रहे हैं तो परिभाषा से ही पता चलता है कि लीडरशिप के लिए लक्ष्य निर्धारित करना आवश्यक है। इसके अलावा लीडरशिप के लिए उद्देश्यों का मूल्यांकन पहले करना आवश्यक है। यदि अगुओं ने यह तय नहीं किया है कि वे किस काम को करने की आशा कर रहे हैं तो लीडरशिप का मूल्यांकन कैसे हो सकता है?

लक्ष्य निर्धारित करने के लिए ज़्या आवश्यक है? इसके लिए हम तीन सुझावों पर विचार करेंगे।

लक्ष्य प्रार्थनापूर्वक निर्धारित किए जाने चाहिए

लक्ष्य निर्धारण प्रार्थना के साथ आरज़्भ होना चाहिए। कलीसिया के अगुओं को कई कारणों के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। पहला, न तो अगुवे और न ही कलीसिया पूरी तरह से परमेश्वर को भाने वाला कोई कार्य कर सकते हैं जो उसकी सहायता के बिना हो सकता हो। भजन लिखने वाले ने कहा है, ''यदि घर को यहोवा न बनाए, तो उसके बनाने वालों का परिश्रम व्यर्थ होगा'' (भजन संहिता 127:1क)। दूसरा, बुद्धि परमेश्वर की ओर से ही मिलती है, ''पर यदि तुम में से किसी को बुद्धि की घटी हो, तो परमेश्वर से मांगे, जो बिना उलाहना दिए सब को उदारता से देता है; और उसको दी जाएगी'' (याकूब 1:5)। तीसरा, परमेश्वर कटाई के लिए मज़दूर भी भेजता है (मत्ती 9:37, 38) और उपज भी बढ़ाता है (1 कुरिन्थियों 3:6)। चौथा, परमेश्वर प्रार्थनाओं का उज़र देता है (1 यूहन्ना 5:14, 15)।

लक्ष्य कलीसिया के मिशन के साथ मेल खाते हों

कलीसिया का मिशन या उद्देश्य खोए हुओं का उद्धार करना (सुसमाचार का प्रचार करना), उद्धार पाए हुओं को बचाए रखना (शिक्षा), भलाई के काम करना (परोपकार), और परमेश्वर को महिमा की भेंटें चढ़ाना (आराधना) होना चाहिए। कोई भी लक्ष्य जो कलीसिया निर्धारित करती है वह किसी न किसी प्रकार इस मिशन के लिए मण्डली की प्राप्ति में योगदान देता हो।

लक्ष्य एक दूसरे के सहयोग से निर्धारित होने चाहिए

लक्ष्य मिल – जुलकर निर्धारित किए जाने चाहिए। लक्ष्य निर्धारित करने के लिए ऐल्डरों, डीकनों, प्रचारकों, उपदेशकों और सदस्यों में से हर एक को साथ लेना चाहिए। सहयोग या योगदान से, निर्धारित किए गए लक्ष्यों का महत्व स्पष्ट है: मण्डली में लक्ष्यों के लिए जोश भरने के लिए आवश्यक है कि सदस्य उन्हें ''ऐल्डरों के'' या ''प्रचारक के'' लक्ष्य नहीं बल्कि ''अपने लक्ष्य'' मानें।

अगुओं के लिए लक्ष्य निर्धारित करने की प्रक्रिया आरज़्भ करने का एक अच्छा ढंग मण्डली के सब सदस्यों को लक्ष्य निर्धारण की किसी सभा में भाग लेने का अवसर देना है। उस समय सबको अपने सपने, आशाओं, दर्शनों व उज़्मीदों का इज़हार करने में भाग लेने की अनुमति देनी चाहिए जिसमें सब लोग बिना किसी आलोचना के भय के बिना अपने विचार व्यज़्त कर सकें।

फिर, लक्ष्य निर्धारण की प्रक्रिया आशाओं और सपनों से आरज़्भ करके वास्तविक योजनाओं तक पहुंचनी चाहिए। लक्ष्य निर्धारण के हर चरण में अधिक से अधिक सदस्य भाग लें।

लक्ष्य शिक्षा से जुड़े हों

लक्ष्य – निर्धारण में भाग लेने वाले लोगों को, जिसमें मण्डली के सभी सदस्य शामिल हैं, यह पता होना चाहिए कि उस प्रक्रिया से पहले और उस प्रक्रिया के दौरान कलीसिया कैसी है। यदि सदस्यों को शिक्षित नहीं किया जाता है, तो वे सुझाव दे सकते हैं कि कलीसिया अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए, अपने आपको प्रसन्न करने के लिए, आराधना के लिए इकट्ठा होने को ही अपना लक्ष्य रखे। शिक्षा से ऐसे लक्ष्यों को कलीसिया के मुज़्य लक्ष्य होने से रोकने में सहायता मिलेगी।

लक्ष्य न्यायसंगत होने चाहिए

लक्ष्यों से मसीहियत के मापदण्ड और आत्मा झलकनी चाहिए। किसी मण्डली के लिए सच्चाई की परवाह किए बिना ''हर हाल में विकास'' करने का लक्ष्य निर्धारित करना न्यायसंगत नहीं होगा। न ही किसी मण्डली का आत्मिक विकास किए बिना संज़्या में बढ़ोतरी की इच्छा करना न्यायसंगत होगा।

किसी कलीसिया के लिए कुछ न्यायसंगत लक्ष्य ज़्या होंगे ? कुछ सामान्य, लज़्बे समय तक रहने वाले लक्ष्य जो न्यायसंगत होंगे इस प्रकार हैं:

1. सार्वजनिक रूप में और निजी तौर पर, अपने इलाके में विश्वासपूर्ण ढंग से परमेश्वर के वचन का हर सज़्भव प्रचार करना।
2. मसीही लोगों की प्रेम करने वाली और सज़्भाल करने वाली ऐसी संगति बनना जिसमें सबको आत्मिक विकास और निजी संतुष्टि का अधिकतम अवसर मिले।
3. मिलकर आराधना करने के अवसर उपलज़्ध कराना जो परमेश्वर को भाते हों और मसीही लोगों को उनसे शिक्षा मिल सके।
4. कलीसिया के हर सदस्य की आत्मिक भलाई को उत्साहित करना। यह तभी होगा यदि हर सदस्य विश्वासी बना रहता है और मसीह के स्वरूप में, उपस्थिति में, चंदा देने में और भागीदारी में बढ़ता है।
5. सदस्यों और गैर सदस्यों दोनों के लाभ के लिए परोपकारी कार्यक्रम से मसीह के प्रेम करने वाले स्वभाव को दिखाना।
6. दूसरे स्थानों में सुसमाचार का प्रचार करना, मिशन कार्य के लिए सहायता देना।
7. ऐसे कार्य आरज़्भ करना जिनसे ऊपर दिए गए लक्ष्य पूरे हों।

हर मण्डली को प्रार्थना और सुझाव के बाद तर्कसंगत लक्ष्यों की अपनी ही सूची बनानी चाहिए।

लक्ष्य मण्डली के लोगों को स्पष्ट हों

किसी मण्डली के लक्ष्यों में मण्डली की विशेष परिस्थितियों को जिसमें कार्यकर्ज़ा, संसाधनों, योग्यताओं और समाज की प्रकृति जैसे तथ्यों को शामिल किया जाना चाहिए। मण्डलियां सदस्यों की कार्यकुशलता और आस - पास की परिस्थितियों के कारण सीमित हो सकती हैं। उदाहरण के लिए, नये बन रहे किसी उपनगर की कलीसिया के जवान सदस्यों में गांवों की मण्डली की अपेक्षा जिसमें बूढ़े लोग अधिक हैं और जवान शहरों में जा रहे हैं, बढ़ने की अधिक शज़्ति है।

लक्ष्यों को चार तरह से देखा जाना चाहिए

चार तरह के लक्ष्यों की पहचान की जानी चाहिए।

पहला कलीसिया का *परम लक्ष्य* उद्धार है (बेशक इसे अलग - अलग शज़्दों में ढाला जा सकता है) - अपना और दूसरों का उद्धार। कलीसिया में हम जो कुछ भी करते हैं उसका अन्तिम लक्ष्य यही होना चाहिए।

दूसरा, *दीर्घकाल के लक्ष्य।* और लोगों को उद्धार पाने में सहायता करने के लिए आने

वाले वर्षों में कलीसिया कैसे बढ़नी चाहिए? अगुओं को विचार करना चाहिए कि भविष्य में पांच, दस या पन्द्रह वर्षों के बाद कलीसिया कैसी हो। जो लक्ष्य आज निर्धारित किए जाते हैं वे उस दीर्घकाल के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए होने चाहिए।

किसी मण्डली के लक्ष्यों में वे साधन भी शामिल होने चाहिए जिनसे इसके दीर्घ अवधि के और परम लक्ष्य पूरे किए जाने हैं। अगले छह महीनों, एक साल, या दो सालों में दीर्घकाल के लक्ष्यों को पाने के लिए मण्डली को ज़्या करना चाहिए? मान लीजिए एक मण्डली फैसला करती है कि अधिक से अधिक लोगों को उद्धार पाने में सहायता के लिए उन्हें अगले पांच सालों में एक बिल्डिंग की आवश्यकता होगी। यह एक दीर्घकालिक लक्ष्य हो सकता है। उस दीर्घकालिक उद्देश्य को पूरा करने के लिए उन्हें निकट भविष्य में ज़्या करना चाहिए? अगले साल में किसी निश्चित रविवार को विशेष चंदा लेना अल्पावधि के लक्ष्यों में से एक हो सकता है।

चौथा, *मददगार या कार्य करने वाले लक्ष्यों की आवश्यकता है।* अल्पावधि के लक्ष्य कैसे पाए जा सकते हैं? किसी विशेष समय में दिखाई देने वाले लक्ष्य कैसे प्राप्त किए जा सकते हैं? ये ''कार्य करने वाले लक्ष्य'' उन योजनाओं और कार्यक्रमों से जुड़े होते हैं जो अल्पावधि के लक्ष्यों को पाने के लिए आवश्यक हैं। ऊपर दिए गए उदाहरण के लिए, कोई मण्डली निज़्न कार्य करने के लक्ष्य निर्धारित कर सकती है:

1. उस प्रयास के सज़्बन्ध में, चंदा लेने से पहले तीन प्रार्थना सभाएं करना।
2. चंदा लेने से पहले चार से छह सप्ताह तक भण्डारीपन पर शिक्षा देना।
3. चंदा लेने से पहले चंदे के बारे में एक बुलेटिन में आठ लेख शामिल करना।
4. अंतिम दो महीनों के लिए हर आराधना में चंदे की घोषणा करना।
5. सब सदस्यों का समर्थन पाने के लिए सभाएं करना।
6. अगुओं में से किसी को मण्डली के हर सदस्य से उसकी सहायता मांगने के लिए कहना।

ये लक्ष्य इस विश्वास के साथ निर्धारित किए जाने चाहिए कि यदि मण्डली इन अल्पावधि लक्ष्यों को प्राप्त कर लेती है, तो वे परमेश्वर की सहायता से, अपने दीर्घकाल के लक्ष्यों को प्राप्त करें, जो अन्त में बहुत से लोगों के उद्धार का कारण बनेंगे।

लक्ष्य प्रामाणिक होने चाहिए

जहां तक सज़्भव हो, अल्पावधि के लक्ष्य और कार्य करने या मददगार लक्ष्य स्पष्ट शर्तों में होने चाहिए, अर्थात वे विशेष समय में पूरे किए जा सकते हों। उदाहरण के लिए मण्डली का लक्ष्य ''मसीह के लिए सज़्पर्क बनाना'' नहीं होना चाहिए। बल्कि यह ''हमारी आराधना सभाओं में आने वाले हर व्यज़्ति के घर जाकर मसीह के लिए सज़्पर्क बनाना, समाज में आए किसी भी नये व्यज़्ति को घर बुलाकर भोजन कराना और अपने समाज में सबको सुसमाचार का साहित्य बांटना'' होना चाहिए। अगुवे यह जान सकते हैं और देख

सकते हैं कि मण्डली ने ये कार्य किए हैं या नहीं। वे देख सकते हैं कि ज़्या उन्होंने अपने लक्ष्य पूरे कर लिए हैं। केवल यह कहना कि ''हमारा लक्ष्य बढ़ना है,'' ''हमारा लक्ष्य और मसीह के जैसे बनना है,'' या ''हमारा लक्ष्य भलाई करना है'' असफलता और निराशा को बुलावा देना ही है।

लक्ष्य नियन्त्रण योग्य होने चाहिए

अल्पावधि के लक्ष्य और कार्य करने वाले या मददगार लक्ष्य नियन्त्रण करने के योग्य होने चाहिए। इसका अर्थ यह है कि अगुओं को मण्डली के लिए ऐसे लक्ष्य निर्धारित करने चाहिए जो उनके वश में रह सकें न कि ऐसे जो उनके नियन्त्रण में न हों। उदाहरण के लिए, किसी मण्डली को एक साल में बीस लोगों को बपतिस्मा देने का लक्ष्य निर्धारित नहीं करना चाहिए यदि उनके पास उस लक्ष्य को प्राप्त करने के *साधन* नहीं हैं। किसी लक्ष्य को पूरा करने की योजना के बिना, उसे जल्द ही भुला दिया जाएगा। एक और समस्या है: मण्डली सीधे इस बात पर कंट्रोल नहीं कर सकती कि वे बीस बपतिस्मे कर पाएंगे या नहीं। कलीसिया का विकास कुल मिलाकर सदस्यों पर निर्भर नहीं है बल्कि यह तो उन लोगों द्वारा वचन को ग्रहण करने पर जिन्हें वे सिखाते हैं (मत्ती 13:1-23) और परमेश्वर पर निर्भर है, जो बढ़ाता है (1 कुरिन्थियों 3:6)।

''नियन्त्रण रखने'' के कारक सहित मण्डली लक्ष्य कैसे निर्धारित करेगी? चार पगों में यहां एक उदाहरण है, जिसमें मण्डली के लिए और जोड़ने के लक्ष्य को शामिल किया गया है।

पहले, मण्डली लक्ष्य निर्धारित करे। वे अगले साल मण्डली में बीस बातें जोड़ना चाहते हैं। वे तय करते हैं कि अपने लक्ष्य को पाने के लिए वे निम्नलिखित कार्य या सहायक लक्ष्य तय करेंगे:

1. व्यक्तिगत कार्य पर बारह प्रवचन दें।
2. सदस्यों के लिए पर्सनल इवेंजलिज़्म की वर्कशॉप लगाएं।
3. हर सदस्य को दूसरे लोगों को लाने को उत्साहित करें और बाहर से आने वाले हर व्यक्ति का स्वागत करें।
4. बाहर से आने वाले हर व्यक्ति से मिलने के लिए उसके घर जाएं।
5. एक ''सज़्भावित सूची'' बनाएं और उस सूची में शामिल हर व्यक्ति से साल में चार बार सज़्पर्क करें।
6. एक कैज़्पेन ऐसा रखें जिसमें हम अपने समाज के लोगों को अपने साथ आराधना के लिए निमन्त्रण दे सकें।
7. कैज़्पेन का अन्त एक सुनियोजित सुसमाचार सभा से करें।
8. समाज के हर नये परिवार से सज़्पर्क करें।
9. समाज के हर अविश्वासी मसीही से सज़्पर्क करें।

दूसरा, सदस्यों को लक्ष्यों को पूरा करने के लिए काम करना चाहिए। उन्हें कार्य के आधार

पर या लक्ष्यों को पूरा करने के लिए काम करना चाहिए। जिसका अर्थ यह हुआ कि उन्हें वे काम करने चाहिए जिनकी योजना बनाई गई है।

तीसरा, अगुओं को परिणामों का मूल्यांकन करना चाहिए। यह अवलोकन यह कहते हुए आरज़्भ होना चाहिए, ''ज़्या हमने अपने लक्ष्य प्राप्त कर लिए? ज़्या हमने कलीसिया में कुछ जोड़ा है?'' यदि हां, तो अच्छा है। ''परमेश्वर की सहायता से, हमने काम की योजना बनाई और योजना पर काम किया,'' वे निष्कर्ष निकाल सकते हैं।

यदि मण्डली में कुछ अतिरिज़्त काम नहीं हुआ हो, तो अगुओं को चाहिए कि पूछें कि ''ज़्यों नहीं हुआ?'' दूसरे प्रश्न भी पूछे जाने चाहिए: ''ज़्या हमने वैसे ही किया जिसकी योजना बनाई थी? ज़्या हमने लक्ष्यों को पूरा करने के लिए कार्य किया?'' यदि किया, तो शायद उन्होंने दूसरों को मसीह में लाने के लिए किए जाने वाले आवश्यक काम को सही ढंग से समझा नहीं। फिर उन्हें आकार में बढ़ने के लिए कुछ और करना होगा या अलग ढंग से। यदि उन्होंने कार्य के लक्ष्य पूरे नहीं किए तो उन्हें कहना चाहिए, ''ज़्या हमारे लक्ष्य हमारी मण्डली के आकार और आवश्यकता के अनुसार अवास्तविक थे? शायद हमने सदस्यों से कुछ अधिक ही उज़्मीद कर ली थी।'' उन्हें कुछ और वास्तविक लक्ष्य निर्धारित करने चाहिए या यह तय करना चाहिए कि दूसरे जो कुछ कर सकते हैं और जो उन्हें करना चाहिए उसके लिए उन्हें प्रेरित करने के लिए ज़्या किया जा सकता है?

चौथा, उन्हें नये लक्ष्य निर्धारित करने चाहिए। एक साल के अनुभव से मण्डली को अगले साल के लिए लक्ष्य तय करने में अगुआई मिल सकती है। थोमस ऐडिसन ने बिजली के बल्ब के प्रकाश के सफलतापूर्वक काम करने के लिए इस्तेमाल से पहले लगभग एक हज़ार प्रयोग किए। यह पूछे जाने पर कि ज़्या उसे एक हज़ार बार असफल होने का दुख है, उसने कहा था कि वह उन्हें असफलताएं नहीं मानता। उसका कहना था कि हर प्रयोग एक सफलता था ज़्योंकि हर बार उसने पाया कि इसे ऐसे नहीं करना चाहिए। यदि हम नियन्त्रण में रखने के योग्य लक्ष्य ठहराने और फिर उनसे सबक लेने के प्रति सचेत हैं, तो हमें किसी भी प्रयास को असफलता मानने की आवश्यकता नहीं होगी। उससे हमें कलीसिया का काम *न* करने का दूसरा ढंग पता चल सकता है।

लक्ष्य परमेश्वर की सामर्थ पर निर्भर हों

आशावाद और ऊर्जा के साथ मण्डली के लक्ष्य परमेश्वर की सामर्थ से भरे होने चाहिए। ज़्योंकि हम ''उस सामर्थ के अनुसार जो हम में कार्य करता है'' (इफिसियों 3:20), ''कहीं अधिक काम कर सकते हैं।'' केवल एक लक्ष्य पर ध्यान रखने और उसे पूरा करने के लिए अपनी मानवीय ऊर्जा को मिलाने वाले लोग अगर अपनी सोच से अधिक प्राप्त कर सकते हैं तो परमेश्वर के हमारे पक्ष में होने पर हो हम उनसे कितना अधिक प्राप्त कर सकते हैं!

सारांश

परमेश्वर के अगुवे हमेशा धुन के पज़्के, लक्ष्य प्राप्त करने वाले लोग होते हैं। नहेमायाह धुन का पज़्का व्यज़्ति था: उसका उद्देश्य यरूशलेम की दीवारों को फिर से बनाना था (नहेमायाह 2:5, 17)। उसने प्रार्थना की, सहायता मांगी, स्थिति का विश्लेषण किया, लोगों को तैयार किया, अपनी सेनाओं को तैयार किया, काम संगठित किया, समस्याओं पर काबू पाया और लक्ष्य को प्राप्त किया (नहेमायाह 4:6; 6:15)। पौलुस धुन का पज़्का आदमी था, ''मेरी भावना यह नहीं कि मैं पकड़ चुका हूं; परन्तु केवल यह एक काम करता हूं ...'' (फिलिप्पियों 3:13, 14)। मसीह एक उद्देश्य की ओर केन्द्रित रहने वाला अगुआ था। उसने कहा, ''ज़्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं, बरन अपने भेजनेवाले की इच्छा पूरी करने के लिए स्वर्ग से उतरा हूं'' (यूहन्ना 6:38); ''ज़्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूंढ़ने और उन का उद्धार करने आया है'' (लूका 19:10); ''जैसे कि मनुष्य का पुत्र, इसलिए नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए, परन्तु इसलिए आया कि आप सेवा टहल करे; और बहुतों की छुड़ौती के लिए अपने प्राण दे'' (मज़ी 20:28)। उसने अपना पूरा जीवन एक महान उद्देश्य को ध्यान में रखकर बिताया और वह उद्देश्य यह था अपनी बलिदानपूर्वक मृत्यु के द्वारा खोए हुओं का ध्यान करके पिता की इच्छा को पूरा करना। उसने क्रूस पर विजय पाई, जिसमें उसने शैतान को मात दी (इब्रानियों 2:14), यह उसके अपने उद्देश्य के प्रति पज़्की धुन के कारण हुआ! परमेश्वर को आज भी लक्ष्य पाने वाले अगुओं की आवश्यकता है।

पाद टिप्पणी

[1]और शज़्द, जैसे ''इरादा'' या ''उद्देश्य'' भी शामिल किए जा सकते हैं। और शज़्दों का इस्तेमाल हो सकता था परन्तु हमने सरलता बनाए रखने के लिए पूरे पाठ में एक ही शज़्द ''लक्ष्य'' का इस्तेमाल किया है।